cite.My e 0;oâr /kkfed xk;u 'kfy;k e Á;Dr

vou) ok| ,o mudh rkyk dk v/;;u

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़,

आगरा से संगीत में पी एच0 डी की उपाधि की पूर्ति हेतु

शोध–प्रबन्ध की

:ijs[kk

2018

funशिकk %

डॉ0 (श्रीमती) रश्मि श्रीवास्तव

एसोसियेट प्रोफेसर

संगीत विभाग, कला संकाय

सह निर्देशिका %

Ák0 l/kk lgxy

संगीत विभाग, कला संकाय

foHkkxk/;{k %

Ák0 ¼Jherh½ lÒæk deksjh सतसंगी

संगीत विभाग, कला संकाय

'kks/kd=h %

दर्शिका तिवारी

ldk; Áe[k

Ák0 t0 d0 oek

अंग्रेजी विभाग, कला संकाय

n;kyckx ,tकेशनल इंस्टीट्यूट

¼MhEM ;fuofl Vh½ n;kyckx] vkxjk&282005

Hkfedk

ब्रजमण्डल भारतीय संस्कृति का ऐसा दर्पण है जिसमें धर्म, संगीत, आध्यात्म व दर्शन अपनी शाश्वत अवस्थाओं में परिलक्षित होते हैं। यदि ब्रजमण्डल को भारत का मूल धार्मिक स्थान कहें तो अतिश्योक्ति न होगी। यूँ तो किसी भी धर्म के मूल में आध्यात्म, संगीत, साहित्य, संस्कार तथा कलाएँ स्वतः ही विद्यमान हो जाती हैं किन्तु ब्रजमण्डल ऐसा स्थान है जहाँ महती ईश्वरीय अनुकम्पा के परिणामस्वरूप यहाँ जहाँ एक ओर मथुरा – वृन्दावन में वैष्णव सम्प्रदायें पनपे वहीं इस क्षेत्र से 50 – 60 किमी0 की दूरी पर सूफी सम्प्रदाय ने फतेहपुर सीकरी में चिश्ती सम्प्रदाय के रूप में जन्म लिया।

ब्रजमण्डल के धार्मिक वातावरण से जहाँ एक ओर वैष्णव सम्प्रदाय ने ध्रुपद, धमार, पद गायन जैसी गायन शैलियों को जन्म दिया वहीं दूसरी ओर चिश्ती सम्प्रदाय से सूफियाना कलाम, हम्द, नात, गुल, चादर, बिदाई इत्यादि जैसी गायन शैलियाँ अस्तित्व में आईं। इन दोनों सम्प्रदायों की गायन शैलियों में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के रागों एवं तालों का अक्षुण्ण समावेश है। इन दोनों सम्प्रदायों ने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को आधार के रूप में कई गायन शैलियाँ प्रदान की जैसे – ध्रुपद, धमार, ख्याल।

वैष्णव सम्प्रदाय द्वारा ध्रुपद एवं धमार तथा चिश्ती सम्प्रदाय द्वारा सूफियाना कलाम, ख्याल, तराना, कव्वाली जैसी गायन शैलियाँ प्रतिष्ठित हुईं। इन दोनों सम्प्रदायों की गायन शैलियों में राग व्यवहार के तत्व राग प्रयोग, विशेष स्वर संगतियाँ, आलाप, बढ़त, लय युक्त बोल बाँट, तानें तथा सौन्दर्यमूलक तत्व प्रचुरता से विद्यमान हैं साथ ही साथ ताल वाद्यों में वैष्णव सम्प्रदाय में पखावज प्रधान वाद्य है। पखावज वाद्य का सुदृढ़ कलात्मक प्रयोग तथा चिश्ती सम्प्रदाय में ढोलक एवं नक्कारे का द्विविध सौन्दर्य युक्त एवं परिष्कृत रूप देखने को मिलता है।

यद्यपि ब्रजक्षेत्र में तीनों ही विधाओं गायन, वादन, नृत्य की छटा दृष्टव्य होती है परन्तु शोधार्थिनी चूँकि अवनद्ध वाद्य वर्ग की छात्रा है एवं स्वयं ब्रजमण्डल से जुड़ी हुई है अस्तु ब्रजक्षेत्र की धार्मिक गायन शैलियों से अत्यन्त प्रभावित रही है। फलतः इस क्षेत्र में प्रयुक्त धार्मिक गायन शैलियों के अन्तर्गत अवनद्ध वाद्यों एवं तालों की क्या व्यावहारिकता रही है तथा यह हमारे धार्मिक

क्षेत्र से किस प्रकार सम्बन्धित है यह जिज्ञासा होना स्वाभाविक ही था। अतः अपनी जिज्ञासाओं की पूर्ति हेतु शोधकर्त्री ने तत् सम्बन्धी साहित्य का अध्ययन किया तो निम्नलिखित सम्बनिधत साहित्य उपलब्ध हुये जो निम्नवत् है –

Ø0 l0	'kk/k ÁcU/k	शोधार्थी
1-	e/; ;qxhu o".ko lEAnk;k e: lxhr	राकेश बाला सक्सैना
2-	/kkfed ,o: lkekftd thou dk mRrj Hkkjrh; lxhr ij ÁHkko	lfÁ;k ckl
3-	[;ky e: HkfDr jpuk;:	lR;orh 'kek
4-	Ckt e: lxhr ijEijk % mnHko ,o: fodkl	Å"kk lDl:uk
5-	Ckt d: HkfDr lEAnk;k dk lekt xk;u	v:t: 'kek
6-	Hkkjrh; lxhr d: ifjÁ{; e: lfQ;kuk dyke lxhr dk v/; ;u	jktdekjh
7-	सूफ़ियाना के चिश्तीय सम्प्रदाय में संगीत का स्थान : Hkkjrh; ifjÁ{; e: ,d v/; ;u	jthr dekj flg
8-	ब्रजराज के संगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन	vkjrh JhokLro
9-	ब्रज प्रदेश के प्रमुख ऋतु – पर्वों के संगीत का विश्लेषणात्मक v/; ;u	d0 vYdk ok".k;
10-	/kkfed] lkxhfrd ,o: lkLÑfrd ifjÁ{; e: /kekj एवं रंग गायन शैलियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन	d0 y{eh 'kek

Ø0 l0	Yk?k 'kk/k ÁcU/k	शोधार्थी
1-	eFkjk & oUnkou d: xkMh; lEAnk; e: fuokfgr lxhrkRed 'kfy;k: dk v/; ;u	fn0;k Mkxkj
2-	Hkkjrh; lxhr e: vou) ok|k: dk v/; ;u Þc:t क्षेत्र के विशेष सन्दर्भ में"	कु0 रश्मि श्रीवास्तव
3-	c:t dh ykd xk;u 'kfy;k: ,o: mue: Á;Dr gku: oky: Áe[k ok|k: dk v/; ;u	:ikyh xIrk
4-	ÞHkjrij {k= dh ykd lLÑfr ,o: c:t ykd	d0 ik#y xykVh

	xhrk dk v/;;uß	
5-	d0okyh d Qrgij lhdjh ?kjku dh xk;dh dk विश्लेषणात्मक अध्ययन	d0 vf.kek pk/kjh
6-	d0okyh e fufgr 'kkL=h; lxhrkRed rRok dk विश्लेषण	d0 _pk dyJ"B
7-	Qrgij lhdjh d0oky ?kjku e x; eudcr ,o निस्बत सूफ़ी गायन शैलियों का विश्लेषणात्मक v/;;u	Pkpy 'kek
8-	Qrgij lhdjh d lQh d0oky ?kjku e 0;oâr रागों एवं बन्दिशों का अध्ययन	d0 uhye

Ø0l0	iLrd ,o if=dk;	Yk[kd@lEikнd
1-	ct lLÑfr e lxhr	vt 'kek
2-	ct dh lxhr ijEijk	Mk0 oUnuk flg
3-	/kkfed ijEijk; ,o fgUnLrkuh lxhr	ju lpno
4-	Lkxhr ekfld if=dk vÁy@eb 1988	Mk0 y{eh ukjk;.k xx
5-	Lkxhr ekfld if=dk vDVcj 2004	Mk0 y{eh ukjk;.k xx

उपर्युक्त वर्णित विवरणों व शोध छात्रा के संज्ञान में आये अब तक हुए शोध कार्यों को दृष्टिगत रखते हुए यह कहा जा सकता है कि शोध कार्यों, पुस्तकों व पत्रिकाओं में धार्मिक गायन शैलियों की जानकारी तो मिलती है किन्तु उन गायन शैलियों में प्रचलित वाद्यों एवं तालों के विषय में कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती। अस्तु इन धार्मिक गायन शैलियों में प्रचलित वाद्यों एवं तालों के विषय में जानकारी प्राप्त करने हेतु शोधकर्त्री द्वारा उपरोक्त विषय को शोध के लिए चुना गया है।

fo"k; dFku %&

cte.My e 0;oâr /kkfed xk;u 'kfy;k e Á;Dr vou) ok| ,o mudh rkyk dk v/;;uA

leL;k dk ÁknqHkkZo :–

ब्रजमण्डल की धार्मिक गायन शैलियों पर अनेक शोध कार्य हो चुके हैं किन्तु इनके तालपक्ष पर कार्य नगण्य हैं जो कि समस्या को उजागर करता है। इन गायन शैलियों में प्रयुक्त तालों की, अवनद्ध वाद्यों की वादन सामग्री तथा कलाकारों के विषय में जानकारी न होने से समस्या का प्रादुर्भाव होता है।

leL;k esa Á;qDr 'kCnksa dh O;k[;k %&

czt ¼laKk] ,dopu½

मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश के अनुसार – मथुरा के पास का स्थान।

e.My ¼laKk] ,dopu] iq0½

jktiky fgUnh **शब्दकोश** ds vuqlkj – गोल, घेरा।

बृहत् सामांतर कोश ds vuqlkj – अध्याय, क्षेत्र, चक्र, प्रांत/प्रदेश, लोक, विभाग।

ç;qDr ¼fØ;k] ,dopu½

बृहत् सामांतर कोश ds vuqlkj – परीक्षित, विनियोजित।

मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश ds vuqlkj – आचरित, व्यवहार में लाया गया।

/kkfeZd **(विशेषण, एकवचन)**

मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश ds vuqlkj – धर्म से सम्बन्धित।

jktiky fgUnh 'kCn**कोश** ds vuqlkj – पवित्र, पुण्यशील, संस्कारी।

xk;u 'kSyh ¼laKk] ,dopu] L=hfyax½

ऐसी विधा, ढंग अथवा रीति जो गाने से सम्बन्धित होती हैं।

vou) ok|

खाल से मढ़े वे वाद्य जो कि संगीत में लय व ताल के निर्वाह हेतु प्रयोग में लाये जाते है अवनद्ध वाद्य कहलाते हैं।

Rkky ¼laKk] iq0½

मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश ds vuqlkj – हाथ पर ताली मारने से उत्पन्न शब्द, संगीत में नियत मात्राओं पर ताली बजाना।

<u>'kks/k dk egRo</u> %&

ब्रज से सम्बन्धित हुए शोधकार्यों, पुस्तकों व पत्रिकाओं में ब्रज के लोक अवनद्ध वाद्य, ब्रज की लोक तथा धार्मिक गायन शैलियों की जानकारी प्राप्त होती है। पुस्तकों में कुछ – कुछ ब्रज के वाद्य भी बताये गये हैं किन्तु कहीं भी धार्मिक गायन शैलियों में प्रचलित अवनद्ध वाद्यों एवं उन पर बजायी जाने वाली वादन सामग्री प्राप्त नहीं होती। अतः शोधार्थिनी द्वारा किया जा रहा यह कार्य महत्वपूर्ण है क्योंकि इस शोध कार्य के माध्यम से ब्रजमण्डल की धार्मिक गायन शैलियों में प्रचलित अवनद्ध वाद्यों एवं उन पर बजायी जाने वाली वादन सामग्री की जानकारी प्राप्त की जा सकेगी।

<u>अध्ययन के उद्देश्य</u> %&

- ब्रजमण्डल में प्रचलित धार्मिक गायन शैलियों का अध्ययन करना।
- निम्बार्क सम्प्रदाय से सम्बन्धित जानकारी खोजना।
- सूफ़ी परम्परा के अन्तर्गत चिश्ती सम्प्रदाय को जानना।
- निम्बार्क एवं चिश्ती सम्प्रदाय में व्यवहृत गायन शैलियों की जानकारी प्राप्त करना।
- ब्रजमण्डल के सूफ़ी परम्परा में प्रयुक्त वाद्यों का अध्ययन करना।
- धार्मिक गायन शैलियों में प्रयुक्त तालों का अध्ययन करना।
- ताल वैशिष्ट्य को उजागर करना।
- दोनों सम्प्रदायों के वादक कलाकारों की जानकारी प्राप्त करना।
- दोनों सम्प्रदायों के वादक कलाकारों की वादन सामग्री को प्रकाश में लाना।

ifjlhekdu %&

प्रस्तुत शोध कार्य समय व सीमा को ध्यान में रखते हुए fuEckdZ lEÁnk; के /kqin] /kekj] in xk;u तथा **चिश्ती सम्प्रदाय** के lwfQ;kuk dyke] gEn] ukr तक ही सीमित रहेगा।

v/;;u dh fof/k :–

- साक्षात्कर, सर्वेक्षणात्मक तथा वर्णनात्मक विधि।

v/;;u ds midj.k %&

- दृश्य–श्रव्य सामग्री (कम्पयूटर, इंटरनेट, टेपरिकॉर्डर, लेपटॉप, मोबाइल)

v/;;u ds L=ksr :–

पुस्तकालय, पत्र–पत्रिकाओं तथा कलाकारों से साक्षात्कार द्वारा।

v/;k;ksa dk foHkktu :–

भूमिका

çFke v/;k;%&

ब्रजमण्डल में प्रचलित धार्मिक परम्पराओं का अध्ययन –

- वैष्णव परम्परा का परिचयात्मक अध्ययन।
- सूफ़ी परम्परा का परिचयात्मक अध्ययन।

f}rh; v/;k;%&

धार्मिक गायन शैलियों का अध्ययन –

- निम्बार्क सम्प्रदाय में प्रयुक्त गायन शैलियाँ।
- चिश्ती सम्प्रदाय में प्रयुक्त गायन शैलियाँ।

r`rh; v/;k;%&

ब्रजमण्डल की धार्मिक गायन शैलियों के वाद्यों का अध्ययनA

prFk v/;k; %&

धार्मिक गायन शैलियों में प्रयुक्त वादन वैशिष्टय का अध्ययन –

- तालों का अध्ययन।
- वादन सामग्री का अध्ययन।

ipe v/;k; %&

निम्बार्क एवं चिश्ती सम्प्रदाय के प्रमुख वादक कलाकारों का अध्ययन।

mil gkj

lUnHk xUFk lph

iLrd

Ø0 l0	Yk[kd dk uke	iLrd dk uke	**प्रकाशक व प्रकाशन** o"k
1-	शर्मा अंजू	ब्रज संस्कृति में संगीत	राधा पब्लिकेशन्स संस्करण–प्रथम 1996
2-	सिंह वन्दना	ब्रज की संगीत परम्परा	राधा पब्लिकेशन्स संस्करण–प्रथम 1996
3-	शर्मा भारती	सांगीतिक एवं धार्मिक परम्परा – एक अवलोकन	संजय प्रकाशन संस्करण–प्रथम 2006
4-	श्रीवास्तव आरती	ब्रज रास में संगीत : उत्पत्ति, विकास और स्वरूप	राधा पब्लिकेशन्स संस्करण–प्रथम 2003
5-	शर्मा सत्यवान	पुष्टिमार्गीय मन्दिरों की संगीत परम्परा	राधा पब्लिकेशन्स संस्करण–प्रथम 1999
6-	श्रीवास्तव गिरीश्चन्द्र	ताल कोश	रूबी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1996
7-	भार्गव अंजना	भारतीय संगीत शास्त्रों में वाद्यों का चिन्तन	कनिष्का पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स संस्करण–प्रथम 2002

8-	मिस्त्री आबान ई0	पखावज और तबला के घराने एवं परम्परायें	पं0 केकी0 एस0 जिजिना स्वर साधना समिति मुम्बई, द्वितीय संस्करण 2000
9-	वनिता वेणु	तबला ग्रन्थ मंजुषा	कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स संस्करण–प्रथम 2004

lf=dk;

Ø0 l0	**lEiknd dk uke**	**lf=dk dk uke**	**प्रकाशक व प्रकाशन o"k**
1-	गर्ग लक्ष्मी नारायण	संगीत पत्रिका, मार्च 1984	संगीत कार्यालय, हाथरस
2-	गर्ग लक्ष्मी नारायण	संगीत पत्रिका, अप्रैर्ल 1984	संगीत कार्यालय, हाथरस
3-	गर्ग लक्ष्मी नारायण	संगीत पत्रिका, अप्रैल 1988	संगीत कार्यालय, हाथरस
4-	गर्ग लक्ष्मी नारायण	संगीत पत्रिका, मई 1988	संगीत कार्यालय, हाथरस
5-	गर्ग लक्ष्मी नारायण	संगीत पत्रिका, जुलाई 1988	संगीत कार्यालय, हाथरस
6-	गर्ग लक्ष्मी नारायण	संगीत पत्रिका, अक्टूबर 2004	संगीत कार्यालय, हाथरस

कोश ग्रन्थ

Ø0 l0	**Ykk[kd dk uke**	**कोश dk uke**	**प्रकाशक व प्रकाशन o"k**
1.	बाहरी हरदेव	राजपाल हिन्दी शब्दकोश	राजपाल एण्ड सन्ज़ 2004
2.	कुमार कुसुम	बृहत् सामांतर कोश	नेश्नल बुक ट्रस्ट, प्रथम संस्करण 2013
3.	दीक्षित कृष्ण कान्त	मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश	कमल प्रकाशन